कबीर की साखियाँ

कबीर दास

1. गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पायँ ।
बलिहारी गुरु आपनों, गोविन्द दियो बताय ।''

2. जहाँ दया तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप ।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ क्षमा तहँ आप ।।

3. ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोय ।
औरन को शीतल करै, आपहु शीतल होय ।।

4. माली आवत देखकर कलियन करी पुकार ।
फूले-फूले चुन लिए काल्हि हमारी बार ।।

5. माला फेरत जुग गया, मिटा न मन का फेर ।
कर का मनका डारि कै, मन का मनका फेर ।।

6. साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप ।
जाके हिरदै साँच है, ताकै हिरदै आप ।।

7. निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटि छवाय ।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करै सुभाय ।

8. काल्ह करै सो आज कर, आज करै सो अब ।
पल में परलै होयगा, बहुरि करेगा कब ।।

9. माखी गुड़ में गड़ि रहै, पंख रह्यै लिपटाय ।
हाथ मलै और सिर धुनै, लालच बुरी बलाय ।।

10. जाकौ राखे साँइयाँ, मारि सके न कोय ।
बाल न बाँका करि सकै, जो जग बैरी होय ।।

भावबोध *:- कबीर अनपढ़ थे, परन्तु उनके दोहे इतने जनप्रिय हुए कि वे जन-जन की वाणी पर बसते हैं । इनकी लोकप्रियता का कारण है अनुभव की गंभीरता, भावों की निश्छलता तथा भाषा की बोधकता । प्रस्तुत दोहों में कबीर ने सद्‌गुरु की महत्ता, ईश्वर की सर्वव्यापकता, सत्य का महत्व, संसार की क्षणभंगुरता, समय की महत्ता आदि पर बड़ी ही सहज-सरल भाषा में अपनी बात कही है । बाह्याडम्बर का विरोध मुक्त हृदय से किया है ।*

- शब्दार्थ -

गोविन्द - ईश्वर । बलिहारी - न्यौछावर होना । काके - किसके । पाँय - पैर । लोभ - लालच । छिमा - क्षमा, माफी । आवत - आते हुए । काल्ह - आने वाला कल । मनका - माला । मन का - हृदय का। साँच- सत्य । आप - ईश्वर । निंदक - निंदा करनेवाला । नियरे - पास, समीप । छवाय - बनाकर । कुटी- झोपड़ी । निरमल - स्वच्छ । सुभाय - स्वभाव । परलै - प्रलय । साँइयाँ - ईश्वर । बलाय - संकट । बैरी- शत्रु । जग - संसार । लिपटाय - लिपटना, चिपकना । पल - क्षण । बहुरि - फिर से ।

प्रश्न और अभ्यास

1. दीर्घ उत्तरमूलक प्रश्न -

(i) संत कबीर ने गुरु के महत्व को कैसे प्रतिपादित किया है ? पठित दोहों के आधार पर लिखिए ।

(ii) संसार की क्षणभंगुरता के बारे में कबीर ने क्या कहा है ? स्पष्ट कीजिए ।

(iii) वाणी के संबंध में कबीर ने कौन सी शिक्षा दी है ? पठित दोहों के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

(iv) कबीर ने समय के महत्व को कैसे समझाया है और बाह्याडंबर का विरोध क्यों किया है ?

(v) लालच के दुष्परिणाम और मधुर वाणी के महत्व को कबीर ने कैसे समझाया है ?

(vi) निंदक को अपना हितैषी मानने और कल के काम को आज करने की सलाह कबीर ने क्यों दी है ?

2. **अति संक्षिप्त उत्तरमूलक प्रश्न -**

(i) संत कबीर के अनुसार कैसी वाणी का प्रयोग करना चाहिए ?

(ii) सत्याचरण से किसकी प्राप्ति होती है ?

(iii) 'मनका', 'मन का'- इन शब्दों के अर्थ स्पष्ट कीजिए ।

(iv) जहाँ क्षमा होती है वहाँ कौन होते हैं ?

(v) हमें कैसी वाणी का प्रयोग करना चाहिए ?

(vi) हमें पहले किसके चरण स्पर्श करने चाहिए और क्यों ?

(vii) निंदक कैसे हमारे दोषों को दूर करता है ?

(viii) कल के काम को आज करने की सलाह कबीर ने क्यों दी है ?

(ix) लालच बुरी बला क्यों है ?

(x) 'बाल न बाँका करि सकै' इस मुहावरे का अर्थ बताइए ।

3. **सप्रसंग व्याख्या कीजिए -**

(i) निंदक नियरे ..... निर्मल करै सुभाय ।

(ii) जाकौ राखे ..... जग बैरी होय ।

(iii) माली आवत ..... काल्हि हमारी बार ।

(iv) गुरु गोविंद ..... दियो बताय ।

(v) जहाँ दया ..... तहँ आप ।

भाषा ज्ञान

4. **पर्यायवाची शब्द लिखिए -**

गुरु, गोविंद, फूल, पानी, हाथ, बाल

5. **निम्नलिखित अनेकार्थी शब्दों के दो-दो अर्थ लिखकर वाक्यों में उनका प्रयोग कीजिए-**

काल, कल, गुरु, कर, पानी, पल ।

6. **यदि शब्द के आरंभ का वर्ण व्यंजन हो तो उसके पूर्व में 'अ' जोड़ देने से विलोम शब्द बन जाता है; जैसे -**

सत्य - असत्य

ऐसे ही नीचे लिखे शब्दों में 'अ' जोड़कर विलोम शब्द बनाइए—

साधु, सार, सम्मान, समान, सुन्दर ।

7. **नीचे कुछ कथन लिखे गए हैं, प्रत्येक कथन को पढ़कर बताइए कि वह किस दोहे से संबंधित है -**

(i) भगवान का ज्ञान गुरु ही कराता है ।

(ii) जहाँ क्षमा होती है वहाँ भगवान निवास करते हैं ।

(iii) जिसकी रक्षा भगवान करते हैं, उसे कोई नहीं मार सकता ।

(iv) सिर्फ माला फेरने से ईश्वर की प्राप्ति नहीं होती ।

(v) कल के काम को आज और आज के काम को अभी करना चाहिए ।

(vi) उचित जोड़े मिलाकर लिखिए -

'क'	'ख'
गुरु	शीतलता
दया	पाप
लोभ	धर्म
मीठी वाणी	गोविंद
मनका	आप
क्षमा	मन का